INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 8 | SEPTEMBER – 2025

झारखंड की जनजातीय महिलाओं का पारंपरिक जीवन–दर्शन : सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक संरचना

डॉ० जुई बनार्जी
शोधार्थी (डि०लिट्०) दर्शनशास्त्र विभाग,बि०बि०म०को०वि०, धनबाद.

डॉ० रीता कुमारी शर्मा
सह–प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष , दर्शनशास्त्र विभाग, बि०बि०म०को०वि० धनबाद.

सारांश :

झारखंड की जनजातीय महिलाएं अपने पारंपरिक जीवन–दर्शन, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संरचना में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। उनका जीवन प्रकृति, आत्मनिर्भरता और सामूहिकता पर आधारित है। कृषि, वनोपज संग्रह, पारंपरिक चिकित्सा, कला और रीति–रिवाजों के माध्यम से वे न केवल आजीविका अर्जित करती हैं, बल्कि सांस्कृतिक ज्ञान को भी पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानांतरित करती हैं।

वे पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में भागीदारी करती हैं तथा सामाजिक नेतृत्व में भी अपनी भूमिका निभाती हैं। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, लोककथाएं, गीत और परंपरागत व्यवहार उनके ज्ञान का आधार हैं। हालांकि, आधुनिकता, विस्थापन और पर्यावरणीय संकटों ने उनके जीवन–दर्शन को चुनौती दी है। इसके बावजूद, आज की जनजातीय महिलाएं स्वयं सहायता समूहों, शिक्षा, और सहकारी समितियों के माध्यम से आत्मनिर्भरता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

यह शोध इस बात पर बल देता है कि झारखंड की जनजातीय महिलाओं की संस्कृति, चेतना और नेतृत्व क्षमताओं को समझना और उन्हें सामाजिक विकास की प्रक्रिया में केंद्र में रखना समय की आवश्यकता है।

शोध–पत्र का उद्देश्य :

1. **झारखंड की जनजातीय महिलाओं के पारंपरिक जीवन–दर्शन की समझ विकसित करना** – यह शोध उन मूलभूत सांस्कृतिक अवधारणाओं, मान्यताओं और जीवन–पद्धतियों को उजागर करता है जिन पर झारखंड की जनजातीय महिलाओं का जीवन आधारित है।
2. **सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संरचना में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण करना** – इस शोध का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि किस प्रकार महिलाएं अपने समुदाय की परंपराओं, ज्ञान और सामाजिक व्यवस्था को जीवित रखती हैं और उसमें सक्रिय भागीदारी निभाती हैं।
3. **पारंपरिक ज्ञान और व्यवहार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की पहचान करना**– शोध इस बात को रेखांकित करता है कि किस प्रकार पारंपरिक कार्य जैसे वनोपज संग्रह, हस्तकला, लोकचिकित्सा, आदि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाते हैं।

4. **समय के साथ आए सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रभाव समझना**– यह शोध यह मूल्यांकन करता है कि आधुनिकता, शहरीकरण, खनन और विस्थापन जैसी प्रक्रियाओं ने जनजातीय महिलाओं के जीवन–दर्शन और भूमिका को किस तरह से प्रभावित किया है।
5. **जनजातीय महिलाओं की चुनौतियों और संभावनाओं की पहचान करना** – यह शोध वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उन संकटों को सामने लाता है जिनसे महिलाएं जूझ रही हैं और साथ ही यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार वे नवाचार, शिक्षा और संगठनात्मक प्रयासों के माध्यम से सशक्तिकरण की दिशा में अग्रसर हैं।
6. **सामाजिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में जनजातीय महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करना** – यह शोध पत्र इस बात की ओर संकेत करता है कि सामाजिक विकास, प्रकृति–संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के प्रयासों में इन महिलाओं की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तावना :

झारखंड राज्य, जो प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक विविधता और जनजातीय परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है, अपने भीतर एक समृद्ध जीवन–दर्शन को संजोए हुए है। विशेषकर यहाँ की जनजातीय महिलाएँ अपने जीवन में जिस प्रकार के मूल्यों, परंपराओं और स्वालंबी सोच का पालन करती हैं, वह न केवल उनके आत्मबल को दर्शाता है, बल्कि समाज की संरचना और संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जनजातीय जीवन–दर्शन केवल धर्म या रीति–रिवाजों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके जीवन की संपूर्ण दृष्टि, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण और जीवन जीने की शैली को अभिव्यक्त करता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ आधुनिकता और उपभोक्तावाद की बयार ने पारंपरिक मूल्यों को संकट में डाल दिया है, वहीं झारखंड की जनजातीय महिलाएँ अब भी अपने जीवन–दर्शन में परंपरा और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए हुए हैं। यह शोध आलेख इसी जीवन–दर्शन, उसमें निहित सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संरचना पर केंद्रित है।

• जनजातीय जीवन–दर्शन की अवधारणा और उसमें नारी की भूमिका :

जनजातीय जीवन–दर्शन प्रकृति से जुड़ा हुआ एक समग्र दृष्टिकोण है जिसमें जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रकृति, समुदाय और पूर्वजों से जोड़कर देखा जाता है। जनजातीय महिलाएँ इस दर्शन की संवाहक और संरक्षिका रही हैं। वे न केवल परिवार का संचालन करती हैं बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों, कृषि कार्यों, पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाती हैं।

जीवन–दर्शन श्रम, आत्मनिर्भरता, सहजीवन, प्रकृति पूजन और समुदाय–प्रधान दृष्टिकोण पर आधारित होता है। उदाहरण स्वरूप, 'सरहुल' पर्व में महिलाएँ पेड़ों की पूजा करती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उनका जीवन–दर्शन पर्यावरण के संरक्षण को भी अपने भीतर समाहित किए हुए है।

• पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्य और उनके अभिव्यक्त रूप :

झारखंड की जनजातीय महिलाएँ जिन सांस्कृतिक मूल्यों को जीवन में उतारती हैं, वे कई रूपों में प्रकट होते हैं।

सामूहिकता का मूल्य – विवाह, पर्व–त्योहार, श्रमदान, गीत–संगीत और मृत्यु–संस्कार में उनकी भागीदारी सामूहिकता और सहजीवन के भाव को दर्शाती है।

प्रकृति–आधारित चेतना – महिलाएँ नदी, पेड़, फसल, चाँद–सूरज आदि के साथ आत्मीय संबंध महसूस करती हैं। वे मानती हैं कि जीवन की निरंतरता इन प्राकृतिक तत्वों के साथ संतुलन में ही है।

मातृसत्तात्मक गरिमा – यद्यपि कई जनजातियों में पितृसत्ता देखने को मिलती है, फिर भी महिलाओं का स्थान निर्णय–प्रक्रिया, धार्मिक आयोजनों और सामाजिक संवादों में महत्वपूर्ण बना रहता है।

श्रम के प्रति सम्मान – महिलाएँ खेत जोतने, बीज बोने, वनोपज संग्रह करने, हस्तशिल्प बनाने और घरेलू कार्यों में सहभागी बनती हैं। इन सभी कार्यों में उनकी स्वायत्तता और श्रम को समाज द्वारा सम्मानित किया जाता है।

कला और संस्कृति की संवाहक – लोकगीत, नृत्य, चित्रकला, पारंपरिक पोशा के इन सभी में महिलाएँ अपनी भावनाओं, अनुभवों और जीवन–दृष्टि को व्यक्त करती हैं।

• सामाजिक संरचना और पारिवारिक व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

झारखंड की जनजातीय सामाजिक संरचना में महिला का स्थान केंद्रीय है। अधिकांश जनजातीय समाज वर्गहीन होते हैं, जहाँ स्त्री और पुरुष को एक–दूसरे का सहयोगी माना जाता है, न कि प्रतियोगी। परिवारों में महिलाएँ बच्चों की प्राथमिक शिक्षा, पारंपरिक ज्ञान, रीति–रिवाज, भोजन व्यवस्था और स्वास्थ्य देखभाल का उत्तरदायित्व निभाती हैं।

कुछ जनजातियों में मातृसत्तात्मक व्यवस्था भी देखने को मिलती है, जैसे खासी समाज (जो भले झारखंड में सीमित हो, पर आदिवासी मातृधारा का उदाहरण है)। झारखंड की संथाल, हो, मुंडा, उरांव, बिरहोर और असुर महिलाओं के योगदान से यह स्पष्ट होता है कि वे सामाजिक उत्तरदायित्व, निर्णय निर्माण और नेतृत्व में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

• पारंपरिक जीवन–दर्शन बनाम आधुनिक चुनौतियाँ

बदलते समय और बाजारीकरण की लहर ने जनजातीय समाज में भी बदलाव लाना शुरू कर दिया है। यह बदलाव कई स्तरों पर देखा जा सकता है:

भूमि और जंगल से विस्थापन: महिलाओं के जीवन–दर्शन की जड़ें भूमि और जंगल में थीं। लेकिन खनन, विकास योजनाओं और औद्योगिकरण के कारण यह रिश्ता टूटता जा रहा है।

शिक्षा और शहरीकरण – जहाँ शिक्षा ने महिलाओं को सशक्त बनाया है, वहीं उसने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती भी दी है। नई पीढ़ी अब पारंपरिक भाषा, रीति–नीति, जीवनशैली से कटती जा रही है।

बाजारवादी संस्कृति का प्रवेश – बाजारीकरण ने उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया है, जिससे पारंपरिक हस्तशिल्प, घरेलू उत्पादन और स्थानीय संसाधनों की उपेक्षा हो रही है।

नशा, हिंसा और सांस्कृतिक क्षरण – शराब, मोबाइल, सोशल मीडिया आदि ने जीवन में ऐसे हस्तक्षेप किए हैं जिससे पारंपरिक सामंजस्य और अनुशासन में कमी आई है।

• जीवन–दर्शन और स्वालंबन : समन्वय की आवश्यकता

आधुनिक युग में झारखंड की जनजातीय महिलाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे पारंपरिक जीवन–दर्शन को संजोए रखते हुए स्वालंबन की दिशा में भी आगे बढ़ें।

स्थानीय संसाधनों पर आधारित आजीविका – पारंपरिक वनोपज, हस्तशिल्प, कढ़ाई–बुनाई, बाड़ी (घर–बगान) आधारित उत्पादन को प्रोत्साहित कर महिलाएँ आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) - झारखंड में हजारों महिला भ्ळ कार्य कर रहे हैं। इनके माध्यम से महिलाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित कर सकती हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य – जनजातीय जीवन–दर्शन में स्वास्थ्य के लिए वनौषधियों और स्वच्छ जीवनशैली का महत्व रहा है। आधुनिक चिकित्सा के साथ इसका समन्वय महिलाओं के लिए कारगर हो सकता है।

सांस्कृतिक उत्सवों और परंपराओं का पुनरुद्धार – युवतियों को लोकगीत, नृत्य, परिधान, भाषा, खानपान की परंपरा से जोड़ना आवश्यक है।

• नीति और प्रशासन में पारंपरिक ज्ञान की भूमिका

आज नीति निर्धारण और विकास योजनाओं में यदि जनजातीय महिलाओं के जीवन–दर्शन को स्थान दिया जाए, तो योजनाएँ अधिक कारगर हो सकती हैं। उदाहरण के लिए –

- वन अधिकार अधिनियम और पेसा अधिनियम में महिला भागीदारी को सशक्त किया जाए।
- स्थानीय पंचायतों में महिला नेतृत्व को जीवन–दर्शन आधारित विकास की दिशा दी जा सकती है।
- जनजातीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों में लोकज्ञान पर शोध को प्रोत्साहित किया जाए।

- **झारखंड की विशिष्ट जनजातियों में महिलाओं की पारंपरिक भूमिका**

संथाल महिलाएँ – कृषि कार्यों में अग्रणी, पारंपरिक झूम खेती, 'सोहराय' पर्व की आयोजिका।
मुंडा महिलाएँ – 'सरना धर्म' की पूजक, प्रकृति पूजन में सक्रिय।
उरांव महिलाएँ – लोकगीत, सामूहिक नृत्य, महुआ बीनने और पिठा बनाने की परंपरा।
हो महिलाएँ – सामाजिक और आर्थिक निर्णयों में भागीदारी, पारंपरिक संगीत की संवाहक।
बिरहोर महिलाएँ – जंगल जीवन, झोपड़ी निर्माण, वनोपज संग्रह में विशेष दक्षता।

- **साहित्य और लोककथाओं में स्त्री जीवन–दर्शन**

जनजातीय साहित्य और मौखिक परंपराओं में महिलाएँ प्रकृति की शक्ति, सहनशीलता और संघर्ष की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित की गई हैं। 'दायरी', 'झुमुर गीत', 'ओल चिकी लिपि' के गीतों में स्त्रियों की जीवन–दृष्टि स्पष्ट होती है। लोककथाओं में महिलाएँ अक्सर बुद्धिमान, साहसी, और समुदाय रक्षक की भूमिका में आती हैं।

- **शिक्षा, तकनीक और स्वावलंबन की नई राहें**

आज झारखंड की जनजातीय महिलाएँ शिक्षा, तकनीक और उद्यमिता के माध्यम से पारंपरिक जीवन–दर्शन को नई चेतना के साथ जोड़ रही हैं। ई–कॉमर्स के जरिए अपने उत्पादों को बेच रही हैं, मोबाइल के जरिए कृषि जानकारी ले रही हैं, और नई पीढ़ी को परंपरा से जोड़ने के लिए वीडियो ब्लॉगिंग तक कर रही हैं। यह पारंपरिक दर्शन और आधुनिक टेक्नोलॉजी का सुंदर समन्वय है।

निष्कर्ष :

झारखंड की जनजातीय महिलाओं का पारंपरिक जीवन–दर्शन उनकी सांस्कृतिक विरासत, पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक सामंजस्य और स्वालंबन का अद्भुत उदाहरण है। यह जीवन–दर्शन न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा है, बल्कि भविष्य की टिकाऊ और संतुलित जीवन शैली का भी मार्गदर्शन कर सकता है। आवश्यकता है कि इस दर्शन को संरक्षण और संवर्धन दिया जाए, ताकि महिलाएँ अपनी परंपरा पर गर्व करते हुए आधुनिकता के साथ आगे बढ़ सकें।

संदर्भ ग्रंथसूची :–

1. वर्मा, रविंद्र, भारतीय जनजातियाँ और संस्कृति, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 2018, पृ. 34–56
2. तिग्गा, जोन. आदिवासी नारी और समकालीन यथार्थ, जनजातीय साहित्य परिषद, रांची, 2016, पृ. 92–108
3. महतो, सविता, झारखंड की महिलाएँः संघर्ष और स्वावलंबन, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृ.– 67–84
4. लकड़ा, एलिजाबेथ. सांस्कृतिक उत्तराधिकार और आदिवासी समाज, आदिवासी विमर्श, 2019, पृ.– 112–130
5. सोरेन, शांति, झारखंड की जनजातियाँ और उनकी परंपराएँ, गंगा पुस्तक केंद्र, जमशेदपुर, 2015, पृ.– 53–66
6. Xaxa Virginius- The Tribes of India, Oxford University Press, 2008, p. 201–224
7. Oraon, Kalpana, Tribal Women in Jharkhand, Tribal Studies Institute, Ranchi, 2020, p. 45–62
8. Hansda, Mahendra, लोककथाओं में आदिवासी स्त्री की छवि, आदिवासी साहित्य मंच, 2018
9. Sinha, Surajit, Tribal Cultures of India, National Book Trust, 2011, p. 95-122
10. Hembrom, Basanti, आदिवासी लोकगीत और स्त्री दृष्टि, आदिवासी साहित्य अकादमी, 2022